ISSN -PRINT-2231-3613ONLINE2455-8729
International Educational Journal
UGC APPROVAL NO. - 42652
CHETANA

Receivedon 9th Feb 2018, **Revised** on 17th Feb 2018; **Accepted** 27th Feb 2018

शोध पत्र

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन

*** छीतर मल खटीक**, शोधार्थी
महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)
Email : cm10081977@gmail.com, Mob : +91 8432717260

मुख्य शब्द – *जीवन कौशल, जागरूकता, उच्च माध्यमिक स्तर, विद्यालयी विद्यार्थी आदि।*

सारांश

जीवन कौशल की संकल्पना जीवन की उस विधि से संबंधित है जो शिक्षा में ज्ञान, मनोवृत्ति और अंतर्वैयक्तिक कौशल हेतु परस्पर आदान–प्रदान पर बल देती है। शिक्षार्थियों में विविध कौशलों का विकास कर उन्हें जीवन की चुनौतियों का दृढ़ता से सामना करने के लिए तैयार करना ही इसका उद्देश्य है। विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जीवन कौशल की परिभाषा इस प्रकार की गई है ''दिन–प्रतिदिन के जीवन में व्यक्ति का सकारात्मक व्यवहार तथा अनुकूलन की प्रवृति ही जीवन कौशल है। जीवन कौशल अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार के लिए ऐसी क्षमताएँ हैं, जो कि व्यक्ति को दैनिक जीवन की समस्याओं और चुनौतियों से प्रभावी रूप से सामना करने का सामर्थ्य प्रदान करती हैं। जीवन एक अनुपम उपहार है। अतः जीवन को विविध कौशलों से युक्त कर जीवन में सुख, शान्ति व समृद्धि का सृजन होता है। इस शोध में शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों में जीवन कौशल का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। इस शोध अध्ययन में विद्यार्थियों के जीवन कौशल पर रहनिवास, लिंग भेद अनुसार तथा वर्गों के पड़ने वाले प्रभावों को तथा अनुसंधान के निष्कर्षों को सम्मिलित किया गया है। यह आने वाले समय में भावी शोधकर्ताओं के द्वारा उपयोग में लाया जा सके तथा शोध को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों पर भी अध्ययन किया जा सके।

प्रस्तावना

मानव मस्तिष्क जिज्ञासु व क्रियाशील है, और प्रयोग प्रगति की जननी। आज चहुँ और विकास दृष्टिगोचर हो रहा है। वह निरन्तर किए गए अनुसंधानों का ही परिणाम है। इसी तरह शिक्षा भी एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य अर्जित ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में प्रसारित करना है। कौशल शब्द की अर्थपरक जटिलताओं में न जाकर सामान्यतः कौशल से अभिप्राय उस व्यक्तिगत निपुणता से है जिसे वह दैनिक–जीवन यापन के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग करता है। कलम पकड़ना एक साधारण सा कौशल है, जबकि क्रिकेट खेलना एक जटिल दक्षता है। चलने का कौशल स्वयं में आता है जबकि बोलने के कौशल में वातावरण एक प्रभावशाली भूमिका निभाता है। फुटबॉल खिलाड़ी का गेंद लुढ़काना, चालक का बस चलाना आदि कार्यों में अभ्यास द्वारा दक्षता का विकास होता है, जबकि अन्य कौशल यथा तक्रपूर्ण चिन्तन तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति आदि बोध और चिंतन से विकसित होते हैं।

जीवन कौशल अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार के लिए ऐसी क्षमताएँ हैं, जो कि व्यक्ति को दैनिक जीवन की समस्याओं और चुनौतियों से प्रभावी रूप से सामना करने का सामर्थ्य प्रदान करती हैं। जीवन एक अनुपम उपहार है। अतः जीवन

को विविध कौशलों से युक्त कर जीवन में सुख, शान्ति व समृद्धि का सृजन होता है। जीवन कौशल की शिक्षा देने का कार्य शिक्षा जगत् का है। शिक्षा जगत् में जीवन कौशल की अपनी विशिष्ट अवधारणा है। वह शिक्षा जो शिक्षार्थी को समाजोपयोगी, राष्ट्रोपयोगी व सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी बना सके। व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास से शिक्षा व शिक्षालयों को सार्थकता प्रदान कर सके। व्यक्ति को घर, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व से अपनत्व का अहसास करा सके, अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक रूप प्रदान कर सके, जीवन के संघर्षों को समझने और उनसे जूझने की क्षमता प्रदान कर सके। जीवन की आपत्तियों से घबरा कर कायरों की तरह पलायन करने की अपेक्षा विवेक सम्मत सामना कर सके। वस्तुतः जीवन कौशल शिक्षा अर्जित ज्ञान, आत्मावलोकन, चिन्तन एवं रचनात्मकता के माध्यम से जीवन से जुड़े तनावों, भावनाओं व संवेदनाओं के साथ समन्वय एवं सन्तुलन पैदा करने की क्षमता प्रदान करती है। जीवन कौशल शिक्षा से सम्प्रेषण एवं अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों में आशाजनक परिवर्तन आता है। समस्या समाधान, विवेक सम्मत निर्णय, पहल, दक्षता आदि जीवन कौशल शिक्षा की देन है। जीवन का एकाकीपन सन्तुष्टि प्रदान करने वाले रचनात्मक कार्यों से परिपूर्ण होता है, न कि भौतिकता की चकाचौंध से। स्वयं के बारे में चिन्तन, परिवार व समाज के बारे में चिन्तन तथा चिन्तन के पश्चात् सही निर्णय लेने की क्षमता जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करती है।

शोध की आवश्यकता व महत्व

मनुष्य होना अपने आप में जीवन कौशल शिक्षा की आवश्यकता को जन्म देता है। अन्य जीव अपनी नेसर्गिक क्षमताओं को स्वतः ही पा लेते है, पर जो मानव होने का मतलब है वह हमारी भाषा प्रयोग करने की क्षमता, तर्क करने की क्षमता, स्वभाव होने की क्षमता आदि क्षमताएँ होना यह सुनिश्चित नही करती की सभी मानव इन विशिष्ट गुणो से परिपूर्ण होंगे। हमें जाग्रत होना पडता है, हमे अपनी क्षमताओं का प्रयोग करना सीखना पडता है। वास्तव में मानव शिशु इतने अपरिपक्व होते है कि उन्हे खुद के भरोसे छोड दिया जाये और दुसरो का मार्गदर्शन और सहायता न मिले तो वे उन मूलभूत क्षमताओं को भी हासिल नही कर पायेंगे जो उनके भौतिक अस्तित्व के लिए आवश्यक है। इसलिए हमें जरूरत होती है–जीवन कौशल शिक्षा की। आज के इस बदलते परिपेक्ष में रूढीवादी शिक्षा पद्धति ने अपना स्थान खो दिया है, वरन शिक्षा क्षैत्र में तकनीक का समावेश हो गया है। आज जहां एक और विद्यार्थी कही ज्यादा कुशल एवं बुद्धिमान है वही दूसरी और निरन्तर ऐसी खबरें भी सामने आती है जहाँ हम देखते है कि छोटे–छोटे बच्चे तनाव ग्रस्त हो गए है, यह शोधकर्ता का कहना है कि एक अच्छा शिक्षक वही है जो सिर्फ अपने विषय वस्तु की बेडियाँ मे न बंधा होकर विषय ज्ञान एवं विषय वस्तु को विद्यार्थी के सहज उपयोग का साधन बना दें। जब ऐसी खबरे आती है। कि किसी विद्यार्थी ने तनाव में आकर आत्महत्या कर ली। कही ना कही इसके जिम्मेदार समाज के साथ–साथ वह शिक्षक भी है। जो बाल्यकाल में उस विद्यार्थी की नीवं मजबूत न कर पाऐ। नीवं से मेरा अभिप्राय शैक्षिक उपलब्धि से नही बल्कि सहपाठ्यक्रम गतिविधियों से है। हमें बचपन से ही विद्यार्थियों को एक अच्छा जीवन जीने की विधाएँ सिखानी होगी।

छात्र–छात्राओं का किशोरावस्था महत्वपूर्ण पड़ाव है, जहां उनमे तेजी से शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास होता है। इस विकास को जीवन कौशल शिक्षा के माध्यम से वैज्ञानिक बदलाव के साथ–साथ सकारात्मक सोच विकसित करने से युवाओं में गुणात्मक चेतना जाग्रत करने में मदद मिल सकती है। जीवन कौशल शिक्षा का महत्व भी इसलिए है कि यह स्कूली शिक्षा में युवा प्रजनन एवं यौन स्वास्थ्य पर शैक्षिक गुणवता को दर्शाता है। जीवन कौशल शिक्षा व्यवहार परिवर्तन अथवा व्यवहार विकास का मार्ग है। जीवन कौशल में वास्तव में ऐसी योग्यताएँ है, जिनके द्वारा किशोर विद्यार्थी को अपने दिन–प्रतिदिन की समस्याओं तथा आवश्यकताओं को सुलझाने की क्षमता को बढ़ावा मिलता है। अतः इस प्रकार जीवन कौशल शिक्षा किशोर विद्यार्थियों को सशक्त बनाती है। प्रस्तुत शोध कार्य में शोधार्थी छात्र ने शोध हेतु इस विचार को केन्द्र बिन्दु मानकर समस्या का चयन किया गया।

समस्या कथन

अनुसंधानकर्ता ने शोध समस्या के रूप में निम्नलिखित समस्या का चयन शोध हेतु किया गया।

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता का अध्ययन''

शोध अध्ययन के उद्देश्य

इस शोध के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किये गये–

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की लिंगभेदानुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की क्षेत्रीय भिन्नतानुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धिस्तरानुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत पिछडे वर्ग, दलित वर्ग एवम् सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना

इस शोध कार्य की निम्नांकित परिकल्पना निर्धारित की गयी–

- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत छात्र–छात्राओं की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धिस्तरानुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत पिछडे वर्ग, दलित वर्ग एवम् सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक अन्तर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण

1 **उच्च माध्यमिक विद्यालय**

वे विद्यालय जिनमें कक्षा 11वीं व 12वीं के विद्यार्थी अध्ययन करते हैं।

2. **राजकीय विद्यालय**

ऐसे विद्यालय जो राज्य सरकार के द्वारा संचालित किए जाते हैं, उन्हें राजकीय विद्यालय कहा जाता है।

3. **जागरूकता**

जागरूकता से अभिप्राय है कि किसी विषय के सम्बन्ध में हम कितनी जानकारी रखते है तथा उस विषय से सम्बन्धित ज्ञान को हम अपने दैनिक जीवन की समस्याओं के निराकरण में उपयोग करते हैं, जागरूकता कहलाती है।

4. **जीवन कौशल**

जीवन कौशल से अभिप्राय अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार की ऐसी क्षमताएँ है, जो व्यक्ति की दैनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं समस्याओं का प्रभावी रूप से सामना करने का सामर्थ्य प्रदान करती है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्य के महत्त्व, उपयोगिता एवं स्रोतों को दृष्टिगत रखते हुए प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित साहित्य का गठन व व्यापक अध्ययन शोधकर्ता द्वारा किया गया है। सामरिया, ममता (2012) के अनुसार विद्यार्थियों के जीवन कौशल एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य धनात्मक एवं सार्थक सह सम्बन्ध होता है। सक्सेना, अलका (2013) ''उच्च माध्यमिक स्तर पर लागू जीवन कौशल विषय के प्रति विद्यार्थियों, अध्यापकों एवं अभिभावकों का प्रत्यक्षीकरण'' का अध्ययन किया गया है। जिससे छात्र–छात्राओं का जीवन कौशल शिक्षा विषय पर कुछ पदों पर अभिमत पूर्णतः सकारात्मक अभिमत किसी भी पद पर सामान्य रूप से सकारात्मक पाया गया। परन्तु न्यून सकारात्मक अभिमत किसी भी पद पर नहीं पाया गया। कुमारी, कमलेश (2014) ने विज्ञान, वाणिज्य व कला वर्ग के उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन कौशलों के अर्जन के तुलनात्मक अध्ययन में कुल जीवन कौशल एवं उनके आयामों स्वजागरूकता, तद्नुभूति, अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, प्रभावी सम्प्रेषण, विवेचनात्मक चिन्तन, सृजनात्मक चिन्तन एवं निर्णय लेना में विज्ञान के विद्यार्थियों में वाणिज्य व कला के विद्यार्थियों से अधिक थी। समस्या समाधान, भावनाओं से जूझना एवं तनावों से जूझना में कला के विद्यार्थियों में वाणिज्य व विज्ञान के विद्यार्थियों से अधिक थी। जिन्दल, संजीव (2016) ने बीकानेर संभाग के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया। इस अध्ययन में जीवन कौशल शिक्षा के प्रति सरकारी एवं गैर सरकारी शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। जीवन कौशल शिक्षा के प्रति शहरी सरकारी एवं शहरी गैर सरकारी शिक्षकों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। कानैया, अतुल आई. (2016) के द्वारा गुजरात प्राप्त के भावनगर जिले के गुजराती माध्यम के नवीं कक्षा के 160 विद्यार्थियों के प्रतिदर्श को स्तरीकृत प्रतिचयन विधि द्वारा चयनित करके तथा आंकड़े एकत्रित करने हेतु आर. जडेजा (2011) की जीवन–कौशल मापनी का प्रयोग करके सर्वेक्षण अनुसंधान विधि द्वारा किया गया। इसमें पाया गया कि ग्रामीण क्षेत्र की छात्राओं की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों के जीवन–कौशल का स्तर सार्थक रूप से उच्च है, लेकिन ग्रामीण और शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के जीवन–कौशल के स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुसंधान विधि व न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में अनुसंधानकर्ता द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिये ''सर्वेक्षण विधि'' का उपयोग किया गया। प्रस्तुत शोध में उपयुक्त यादृच्छिक विधि से न्यादर्श का चयन किया गया है। न्यादर्श हेतु राजस्थान के टोंक व अजमेर जिले के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को लिया गया है। 800 राजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों के अन्तर्गत 400 ग्रामीण एवं 400 शहरी क्षेत्र से

सम्बन्धित है। जिसमें 400 ग्रामीण विद्यार्थियों के अन्तर्गत 200 छात्र एवं 200 छात्रा को सम्मिलित किया गया है। 400 शहरी विद्यार्थियों के अन्तर्गत 200 छात्र एवं 200 छात्रा को लिया गया है।

शोध उपकरण

1 स्वनिर्मित उपकरणः– उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए जीवन कौशल मापनी का निर्माण किया गया।

2 मानकीकृत उपकरणः–श्याम स्वरुप जलोटा द्वारा निर्मित मानसिक योग्यता संशोधित सामूहिक परीक्षा का प्रयोग किया गया।

दत्त विश्लेषण के लिए सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, प्रमाप विचलन, सह–सम्बन्ध, टी'–मूल्य व 'एफ'–मान जानने के लिए सांख्यिकी का प्रयोग किया गया।

मुख्य निष्कर्ष

इस शोध कार्य के निष्कर्ष निर्धारित उद्देश्यो व परिकल्पनाओं के आधार पर प्राप्त हुए है–

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता निम्न प्रकार से पायी गयी–

विद्यार्थी जीवन कौशल मापनी में जीवन कौशल से सम्बंधित कुल दस आयामों में 28 प्रतिशत विद्यार्थियों ने "सदैव" में अपना मत व्यक्त किया है। 52 प्रतिशत विद्यार्थियो ने "बहुधा" पर अपना मत व्यक्त किया है। 17 प्रतिशत विद्यार्थियो ने "कभी–कभी" अपना मत व्यक्त किया है। 2 प्रतिशत विद्यार्थियो ने "बहुत कम" अपना मत व्यक्त किया है। 01 प्रतिशत विद्यार्थियों ने "कभी नही" पर अपना मत व्यक्त किया है।

सारांश रूप में यह कहा जा सकता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के आयामों अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, सृजनात्मक चिंतन, विवेचनात्मक चिंतन, स्वजागरूकता, भावनाओं से जूझना, प्रभावी संप्रेषण, समस्या समाधान, निर्णय लेना, तनावों से जूझना, तद्नुभूति के प्रति जागरुकता पायी गयी।

2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की लिंगभेदानुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता निम्न प्रकार से पायी गयी–

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों तथा छात्राओं के जीवन कौशल मापनी के कुल प्राप्तांक पर लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों तथा छात्राओं के जीवन कौशल मापनी के आयामों सृजनात्मक चिंतन, विवेचनात्मक चिंतन, स्वजागरूकता, भावनाओं से जूझना, प्रभावी संप्रेषण, समस्या समाधान, तनावों से जूझना, तद्नुभूति प्राप्तांक पर लिंगभेद का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों तथा छात्राओं के जीवन कौशल मापनी के आयाम अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध पर लिंगभेद का सार्थक प्रभाव पाया गया।

3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की क्षेत्रीय भिन्नतानुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता निम्न प्रकार से पायी गयी–

उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों तथा शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल मापनी के कुल प्राप्तांक पर रहनिवास का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण विद्यार्थियों तथा शहरी विद्यार्थियों के जीवन कौशल मापनी के समस्त आयामों अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, सृजनात्मक चिंतन, विवेचनात्मक चिंतन, स्वजागरूकता, भावनाओं से जूझना, प्रभावी संप्रेषण, समस्या समाधान, तनावों से जूझना, एवं तद्नुभूति पर रहनिवास का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

4. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की बुद्धिस्तरानुसार जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता निम्न प्रकार से पायी गयी–

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के कुल जीवन कौशल प्राप्तांक पर बुद्धिस्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के कुल जीवन कौशल मापनी के आयामों सृजनात्मक चिंतन, विवेचनात्मक चिंतन, स्वजागरूकता, भावनाओं से जूझना, प्रभावी संप्रेषण, समस्या समाधान, निर्णय लेना, तनावों से जूझना व तद्नुभूति पर बुद्धिस्तर का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के कुल जीवन कौशल मापनी के प्रथम आयाम 'अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध' का सार्थक प्रभाव पाया गया।

5. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत पिछडे वर्ग, दलित वर्ग एवम् सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता निम्न प्रकार से पायी गयी–

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों के कुल जीवन कौशल मापनी के प्राप्तांकों पर विभिन्न वर्गों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का कुल जीवन कौशल मापनी के आयामों सृजनात्मक चिंतन, विवेचनात्मक चिंतन, स्वजागरूकता, भावनाओं से जूझना, प्रभावी संप्रेषण, समस्या समाधान, निर्णय लेना, तनावों से जूझना व तद्नुभूति के प्राप्तांकों पर विभिन्न वर्गों का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया।

उच्च माध्यमिक स्तर के छात्रों का जीवन कौशल मापनी के प्रथम आयाम 'अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध' पर विभिन्न वर्गों का सार्थक प्रभाव पाया गया।

6. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सह–सम्बन्ध निम्न प्रकार से पाया गया–

उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के जीवन कौशल मापनी के कुल जीवन कौशल शिक्षा के प्राप्तांकों का विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के आयामों अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, सृजनात्मक चिंतन, विवेचनात्मक चिंतन, स्वजागरूकता, भावनाओं से जूझना, प्रभावी संप्रेषण, समस्या समाधान, निर्णय लेना, तनावों से जूझना, तद्नुभूति से धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

मानसिक स्तर का जीवन कौशल मापनी के कुल जीवन कौशल शिक्षा तथा जीवन कौशल शिक्षा के आयामों अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, सृजनात्मक चिंतन, विवेचनात्मक चिंतन, स्वजागरूकता, भावनाओं से जूझना, प्रभावी संप्रेषण, समस्या समाधान, निर्णय लेना, तनावों से जूझना, तद्नुभूति से धनात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया। जबकि अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध से ऋणात्मक सार्थक सह–सम्बन्ध तथा भावनाओं से जूझना से ऋणात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।

भावी शोध हेतु सुझाव

प्रस्तुत शोध प्रबंध में परिसीमन एवं निष्कर्षों के आधार पर भावी शोध हेतु निम्नलिखित सुझाव उल्लेखित किए गए है–

उच्च माध्यमिक तथा माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मध्य जीवन कौशल का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

प्रशिक्षणार्थियों के जीवन कौशलों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

अध्यापकों, अभिभावकों तथा विद्यार्थियों के मध्य जीवन कौशल का एक तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

राजकीय तथा अराजकीय विद्यालय के विद्यार्थियों का जीवन कौशल के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का अध्ययन किया जा सकता है।

वर्तमान अध्ययन में शोधकर्ता ने शोधकार्य को टोंक एवं अजमेर जिले तक ही सीमित रखा है। अतः भविष्य में राजस्थान राज्य के अन्य जिलों को सम्मिलित करके भी शोधकार्य किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- गुड सी. पी. एण्ड स्केट्स (1954). रिसर्च मैथडोलोजी, न्ययार्क : सैन्चुरी क्रॉफ्ट्स.
- मैसलो, ए. एच. (1959). न्यू नॉलेज इन ह्यूमन वेल्यूज, न्यूयार्क : हॉर्पर एण्ड राय पब्लिकेशन
- बेस्ट, जॉन डब्ल्यू. (1963). रिसर्च इन एजूकेशन', नई दिल्ली : प्रिटिंग्स हॉल, प्रा. लि.
- राजासेनन, नायर वी. (1968). लाइफ स्किल्स पर्सनैलिटी एण्ड लीडरशिप, न्यू दिल्ली : एम/एस सैवॉड्स प्रिंट सिस्टम.
- ढोढियाल, सच्चिदानन्द एवं फाटक, अरविन्द (1992). शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, जयपुर : राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी.
- नेशनल एड्स कंट्रोल (2000). हियरिंग फॉर ए गाइड टू फैमिली हैल्थ एण्ड लाइफ स्किल्स एजूकेशन फॉर टीचर एण्ड स्टूडेण्ट, देहली : नेशनल एड्स कंट्रोल आरगनाइजेशन.
- सेठ, एम. (2000). प्लानिंग लाइफ स्किल्स एजूकेशन फौर एडोलेसेण्ट इन कॉरपोरेटिंग, रिलेशनशिप, हैल्थ एण्ड जैण्डर, न्यू देहली : यू. एन. एफ. पी. ए.
- यूनेस्को (2001). लाइफ स्किल्स इन नॉन फार्मल एजूकेशन. यूनेस्को : ए रिव्यू.
- गर्ग, गीता (2011). लाइफ स्किल्स एण्ड एकैडेमिक एंग्जाइटी ऑफ सैकेण्ड्री स्कूल चिल्ड्रन, एज्यूट्रक्स वोल्यूम 2, नं. 1 सितम्बर 2011, पेज 23.
- करपागम, एस. (2012). एन इंट्रोडक्शन टू एजूकेशन एण्ड लाइफ स्किल्स, साउथ जोन केरल प्रकाशन : काउंसिल फौर टीचर, एजूकेशन.
- एन. सी. ई. आर. टी. जीवन के लिए शिक्षा, एन. सी. ई. आर. टी. यूनेस्को : शिक्षकों, विद्यार्थियों, पारिवारिक स्वास्थ्य एवं जीवन कलाओं की शिक्षा की गाइड.

**** Corresponding Author:***

छीतर मल खटीक, शोधार्थी

महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर (राजस्थान)

Email : cm10081977@gmail.com, Mob : +91 8432717260